अमीरे अहले सुन्नत की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" से लिये गए मवाद की चौथी क़िस्त

Allah Miyan Kahna Kaisa ? (Hindi)

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

कुल सफ़हात 26

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عزوجل ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

येह रिसाला (**अल्लाह मियां कहना कैसा ?**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

यह मज़मून ''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब'' के सफ़हा 100 ता 132 से लिया गया है।

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

दुआए अत्तार

या अल्लाह ! जो कोई रिसाला ''**अल्लाह मियां कहना कैसा ?**'' के 25 सफ़हात पढ़ या सुन ले उस को अपना और अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा अदब नसीब फ़रमा। اٰمِین

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले से फ़रमाया : ''दुआ़ मांग, क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।''

(سُنَنُ النَّسائی ص ۲۲۰ حدیث ۲۲۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मकान से पाक है" के बारे में सुवाल जवाब

''रोज़ी देने वाला ऊपर बैठा है'' कहना कैसा ?

सुवाल : ''रोज़ी देने वाला या इन्साफ़ करने वाला **ऊपर** बैठा है।'' कहना कैसा ?

जवाब : येह कलिमए कुफ़्र है क्यूं कि इस में **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के लिये **सम्त व मकान** साबित किये

गए हैं। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **मकान** साबित करना **कुफ़्र** है कि वोह **मकान** से पाक है, येह कहना कि "ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम" येह **कलिमए कुफ़्र** है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 9, स. 180,

(فتاوٰی قاضی خان ج٤ ص ٤٧٠

बच्चों को अल्लाह कहना सिखाइये

सुवाल : अपने बच्चों को बा'ज़ लोग येही ज़ेह्न देते हैं कि **अल्लाह** ऊपर है । लिहाज़ा इन बच्चों को जब प्यार से पूछा जाए कि **अल्लाह** तआ़ला कहां है ? तो फ़ौरन आस्मान की त़रफ़ उंगली उठा देते हैं । ऐसा सिखाना कैसा ?

जवाब : इस त़रह़ वोही सिखाता होगा जिस का अपना ज़ेह्न भी येही होता होगा कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ "**अल्लाह** तआ़ला ऊपर है या ऊपर उस का **मकान** है जिस में वोह रहता है" येह दोनों बातें कुफ़्र हैं । **अल्लाह** तआ़ला जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और **मकान** से भी । बच्चे को इशारा मत सिखाइये बल्कि ज़ूं

www.dawateislami.net

ही बोलने के लाइक़ हो सब से पहले उस की ज़बान से लफ़्ज़ "**अल्लाह**" निकलवाने की कोशिश फ़रमाइये । इस के बा'द لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहना सिखाइये । नीज़ उस को येह कहना भी सिखाइये : **अल्लाह हमारी जान से भी क़रीब है ।** पारह 26 **सूरए ق** आयत नम्बर 16 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿۱۶﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِى फ़रमाते हैं : येह कमाले इ़ल्म का बयान है कि हम बन्दे के ह़ाल को खुद उस से ज़ियादा जानने वाले हैं, "वरीद" वोह रग है जिस में ख़ून जारी हो कर बदन के हर हर जुज़्व (या'नी हिस्से) में पहुंचता है, येह रग गरदन में है । मा'ना येह हैं कि इन्सान के अज्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई चीज़ पर्दे में नहीं ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 826)

www.dawateislami.net

"अल्लाह" का इशारा गूंगे बहरे किस त़रह़ करें ?

सुवाल : आज कल गूंगे बहरों को तरबियत देने वाले "**अल्लाह**" का इशारा आस्मान की त़रफ़ उंगली उठवा कर सिखाते हैं येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : येह त़रीक़ा क़त़्अ़न ग़लत़ है। इन बेचारों के ज़ेह्न में येही नज़रिय्यात बैठ जाते होंगे कि "**अल्लाह** तआ़ला ऊपर है या ऊपर उस का **मकान है** जिस में वोह रहता है येह दोनों बातें **कुफ़्र** हैं" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और **मकान** से भी। आस्मान की त़रफ़ इशारा करने के बजाए इन को हाथ के ज़रीए लफ़्ज़ "**अल्लाह** (**اللہ**)" बनाना सिखाना चाहिये और इस का त़रीक़ा निहायत ही आसान है। सीधे हाथ की उंग्लियां मा'मूली सी कुशादा कर के अंगूठे का सिरा ऊपर की त़रफ़ थोड़ा सा बढ़ा कर शहादत की उंगली के पहलू के वस्त़ में लगा लीजिये अब सीधी हथेली की पुश्त की त़रफ़ देखिये तो लफ़्ज़ **अल्लाह** (**اللہ**) महसूस होगा। इसी त़रह़ कर के उलटे हाथ की हथेली की अगली त़रफ़ देखेंगे तो **अल्लाह** (**اللہ**) लिखा हुवा नज़र आएगा।

www.dawateislami.net

फ़िल्में कुफ़्रिय्यात सीखने का ज़रीआ हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआला के लिये मकान और जिहत (या'नी सम्त) साबित करने वाले जुम्ले लोगों में काफ़ी राइज होते जा रहे हैं मसलन "ऊपर वाला" कहना तो बहुत ज़ियादा आम है। जो कि अक्सर लोगों ने ज़ियादा तर फ़िल्मों ड्रामों से सीखा है । चूंकि हर मुसल्मान **कुफ़्रिय्यात** की पहचान नहीं कर पाता, इस वज्ह से न जाने कितने मुसल्मान रोज़ाना येह ग़लतियां करते होंगे । **जिन लोगों से ज़िन्दगी में कभी एक बार भी येह जुम्ला सादिर हो गया हो उन्हें चाहिये कि इस से तौबा करें और नए सिरे से कलिमा पढ़ें और अगर शादी शुदा हैं तो नए सिरे से निकाह भी करें** । काश ! मुसल्मान **बुरे ख़ातिमे** का डर अपने अन्दर पैदा करें, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों से कनारा कशी इख़्तियार करें और **ज़रूरिय्याते दीन** का इल्म हासिल करें । **आह**! मौत हर वक़्त सर पर खड़ी है ! **मौत** बीमारियों, धमाकों, हंगामों, सैलाबों, तूफ़ानी बारिशों, ज़ल्ज़लों, आतश ज़दगियों, नीज़ तेज़ रफ़्तार गाड़ियों के ह़ादिसों के ज़रीए अच्छे ख़ासे कड़ियल जवानों को भी फ़ौरी

www.dawateislami.net

तौर पर उचक कर ले जाती है और सारी ख़र मस्तियां और फ़न्कारियां ख़ाक में मिल जाती हैं

जल गए परवाने शम्एं पानी पानी हो गईं
मेरा तेरा ज़िक्र हो कर अन्जुमन में रह गया

"अल्लाह आस्मान से देख रहा है" कहना कैसा ?

सुवाल : बद निगाही करने वाले को डराने के लिये येह कह सकते हैं या नहीं कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **आस्मान से देख रहा है।**

जवाब : नहीं कह सकते कि येह **कुफ़्रिय्या जुम्ला** है। **फ़तावा आ़लमगीरी** जिल्द 2 सफ़हा 259 पर है : "**अल्लाह** तआ़ला आस्मान से या अ़र्श से देख रहा है" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ص۲۵۹) हां बद निगाही बल्कि किसी भी त़रह़ का गुनाह करने वाले को येह एह़सास दिलाया जाए कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है।**" जैसा कि पारह 30 **सूरतुल अ़लक़** की 14वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या न जाना कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) देख रहा है।

www.dawateislami.net

हज़ार ह़ज से बेहतर अ़मल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! ह़क़ीक़ी मा'नों में हमारे ज़ेह्न में हर वक़्त येह बात जमी रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हमें देख रहा है** अगर वाक़ेई इस तसव्वुर की मे'राज नसीब हो जाए तो फिर गुनाहों का सुदूर नहीं हो सकता। ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ह़सरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे : "एक बार बैठना **हज़ार ह़ज** से बेहतर है।" इस एक बार बैठने से मुराद येही है कि तमाम तर तवज्जोह जम्अ़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने आप को ह़ाज़िर तसव्वुर करना (कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है) (اَلرِّسَالَةُ الْقُشَيْرِيَّة ص ٣٢١) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

आंखों में आग की सलाई फिराई जाएगी

काश ! निगाहों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बन जाए, यक़ीनन बद निगाही का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। **अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं : **"जिस ने ना महरम से आंख की ह़िफ़ाज़त**

www.dawateislami.net

न की बरोज़े क़ियामत उस की आंख में आग की सलाई फिराई जाएगी।" (بَحرُالدُّمُوع ،ص۱۷۱۔۱۷۲)

आंखों के क़ुफ़्ले मदीना[1] का एक मदनी नुस्ख़ा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **जुनैद बग़दादी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی से किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मैं आंखें नीची रखने की आ़दत बनाना चाहता हूं, कोई ऐसी बात इर्शाद फ़रमाइये जिस से मदद ह़ासिल करूं। फ़रमाया : येह ज़ेह्न बनाए रखो कि **मेरी नज़र किसी दूसरे को देखे इस से पहले एक देखने वाला** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) **मुझे देख रहा है।** (اِحیاءُ العُلُوم ج ٥ ص ١٢٩) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

नीची नज़र रखने का ला जवाब त़रीक़ा

बयान किया जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान

---

(1) बद निगाही के साथ साथ फ़ुज़ूल निगाही से भी बचना और ह़या से अक्सर नज़रें नीची रखना दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में "आंखों का क़ुफ़्ले मदीना" कहलाता है।

www.dawateislami.net

बिन अबी सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नमाज़े ईद के लिये गए । जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अहलिया कहने लगी : आज आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कितनी औरतें देखीं ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इसरार किया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **घर से निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने** (पाउं के) **अंगूठों की त़रफ़ देखता रहा ।**

(کتابُ الْوَرَع مع موسُوعَه امام ابن ابی الدُّنیا ، ج ۱ ص ۲۰۵)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! **अल्लाह** वाले बिला ज़रूरत बिल ख़ुसूस भीड़ के मौक़अ़ पर इधर उधर देखते ही नहीं कि मबादा (या'नी ऐसा न हो कि) शरअ़न जिस की इजाज़त न हो उस पर नज़र पड़ जाए ! (गुज़रे हुए नेक बन्दों की एक अ़लामत बयान करते हुए) ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : नेक लोग फ़ुज़ूल इधर उधर देखने को ना पसन्द करते थे । (ایضاً ص ۲۰٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

कोई देख तो नहीं रहा !

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सिन्जी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ जब देखता है कि उसे कोई (आदमी) नहीं देख रहा तो वोह गुनाह कर डालता है। **अफ़्सोस !** कि वोह इस बात का तो ख़याल रखता है कि लोग उसे न देखें मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है** इस बात का लिहाज़ नहीं करता। (ایضاً ص ۱۳۰) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख सर पे तलवार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मदनी इल्तिजा : सुन्नतों भरे बयान का केसिट बनाम : **''अल्लाह देख रहा है'' मक्तबतुल मदीना** से हदिय्यतन ह़ासिल कर के ख़ुद भी सुनिये और घर वालों को भी सुनाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई मुफ़ीद पाएंगे।

''ऊपर अल्लाह का सहारा'' कहने का हुक्मे शरई

सुवाल : किसी से यूं कहना कैसा है कि ''ऊपर **अल्लाह** का

www.dawateislami.net

सहारा, ज़मीन पर आप का सहारा।''

जवाब : कुफ़्र है कि इस में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के लिये **मकान व सम्त** को साबित किया जा रहा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ''ऊपर वाला'' कहना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के लिये **ऊपर वाला,** बोलना कैसा है ?

जवाब : अल्लाह तबारक व तआ़ला की ज़ात के लिये लफ़्ज़ ''ऊपर वाला'' बोलना **कुफ़्र** है कि इस लफ़्ज़ से उस के लिये **जिहत** (या'नी सम्त) का सुबूत होता है और उस की ज़ात जिहत (सम्त) से पाक है जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा **सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** तबारक व तआ़ला **मकान** में होने से पाक है और जब वोह **मकान** में होने से पाक है तो **जिहत** (या'नी सम्त) से भी पाक है, (इसी त़रह़) **ऊपर** और **नीचे** होने से भी पाक है।'' (شرح العقائد ص ٦٠) और ह़ज़रते अ़ल्लामा **इब्ने नुजैम मिस्री** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ऊपर** या **नीचे** क़रार दे तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** लगाया जाएगा।'' (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣)

www.dawateislami.net

लेकिन अगर कोई शख़्स **येह जुम्ला बुलन्दी व बरतरी** के मा'ना में इस्ति'माल करे तो क़ाइल पर हुक्मे कुफ़्र न लगाएंगे मगर इस क़ौल को बुरा ही कहेंगे और क़ाइल को इस से रोकेंगे। (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 2)

"अल्लाह मस्जिद, मन्दर हर जगह है" कहना

सुवाल : किसी ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर जगह है, का'बे में भी है, मस्जिद में भी है, मन्दर में भी है और गिरजा में भी है" कहने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : कहने वाले पर **लुज़ूमे कुफ़्र** का हुक्म है क्यूं कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **मकान** साबित किया गया है। इस त़रह़ के कलिमात ह़म्दिया कलाम में बा'ज़ **ना'त ख़्वान** पढ़ते हैं, उन को **तौबा व तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** करना चाहिये।

"अल्लाह मकान से पाक है" इस की वज़ाह़त

सुवाल : आज कल उ़मूमन अ़वाम येह कहते सुनाई देते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऊपर रहता है, उस का आस्मान पर मकान है। बे शुमार लोग यूं भी बोलते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर जगह है। ह़ालां कि इस्लामी अ़क़ीदा येह है कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ जगह व मकान से पाक है।

www.dawateislami.net

मेहरबानी कर के इस की वज़ाहत कर दीजिये।

जवाब : बेशक **अल्लाहु रहमान** عَزَّوَجَلَّ जगह व मकान से पाक है। दर अस्ल फ़िल्में ड्रामे देख देख कर और बेहूदा ग़ज़लें और फ़िल्मी गाने सुन सुन कर बहुत से लोगों के ज़ेहनों के अन्दर सुवाल में मज़्कूरा कुफ़्री अ़क़ीदा जम गया है। और इन लोगों से सुन सुन कर औलाद दर औलाद ज़ेहनों में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह अ़क़ीदा मुन्तक़िल होता जा रहा है। इल्मे दीन व उ़लमाए दीन से दूरी के बाइस **अल्लाहु रहमान** عَزَّوَجَلَّ का जगह और **मकान** से पाक होना बा'ज़ अ़ज़्हान क़बूल नहीं कर पाते। ख़ुदाए हन्नानो मन्नान جَلَّ جَلَالُہٗ के जगह व **मकान** से पाक होने पर यूं तो बे शुमार दलाइल हैं मगर मैं सिर्फ़ एक दलील अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़बूले ह़क़ का जज़्बा रखने वाला ज़ेहन फ़ौरन क़बूल कर लेगा : येह बात ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ क़दीम है या'नी हमेशा हमेशा से है। वोह तब से है कि जब अब तब कब, यहां वहां ऊपर नीचे, दाएं बाएं वग़ैरा कुछ भी न था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात के इलावा हर चीज़ **ह़ादिस** है। ह़ादिस, क़दीम की

www.dawateislami.net

ज़िद है। ह़ादिस या'नी वोह कि जो अ़दम से वुजूद में आए। इस को और आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि जो पहले से न था मगर बा'द में मौजूद हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात को **क़दीम** ही मानता है और इस के इ़लावा हर चीज़ बा'द में बनाई गई इस को भी तस्लीम करता है तो बस इतनी सी बात समझने की ज़रूरत है कि बा'द में बनाई जाने वाली चीज़ों में यक़ीनन ज़मीनो आस्मान, अ़र्श व कुर्सी, ऊपर नीचे दाएं बाएं वग़ैरा भी शामिल हैं। अब अगर येह कहा जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऊपर है या आस्मान पर है या अ़र्श पर है या हर जगह है तो फिर आस्मान, अ़र्श बल्कि हर जगह को क़दीम मानना लाज़िम आएगा या फिर येह ज़ेहन बनाना पड़ेगा कि पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जगह व मकान से पाक था बा'द में जूं जूं वोह عَزَّوَجَلَّ चीज़ें बनाता गया उन में "रहता" चला गया। जब "ऊपर" वुजूद में आया तो ऊपर आ गया, जब "नीचे" की तख़्लीक़ हुई तो नीचे उतर आया, "अ़र्श" बनाया तो अ़र्श पर पहुंच गया और जब "जगहें" पैदा कीं तो हर जगह तशरीफ़ ला कर रहने लगा। وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه۔

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात (आमीन)

www.dawateislami.net

उम्मीद है कि मस्अला समझ में आ गया होगा। बहर हाल शरई हुक्म येही है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को "ऊपर" या "आस्मान पर रहता है" या "हर जगह है" कहना **कुफ़्रे लुज़ूमी** है। येह अ़क़ीदा रखने वाला मुसल्मान अगर्चे उ़लमाए मुतकल्लिमीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के नज़्दीक इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता ताहम फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। लिहाज़ा उस पर लाज़िम है कि **तौबा, तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** करे।

मकान के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 7 मिसालें

﴿1﴾ **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिहत (या'नी सम्त) मानना **कुफ़्र** है या'नी येह कहना **अल्लाह** तआ़ला ऊपर है वग़ैरहा। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص٢٠٣) सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला जिहत (या'नी सम्त) व **मकान** व ज़मान व ह़रकत व सुकून व शक्ल व सूरत व जमीअ़ ह़वादिस से पाक है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, स. 8)

﴿2﴾ ख़ुदा के लिये **मकान** साबित करना (या'नी मानना या कहना) **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص٢٠٣)

www.dawateislami.net

﴿3﴾ **अल्लाह** तआ़ला के लिये **जिस्म** और **मकान** साबित करना **कुफ़्र** है। इस मस्अले की तफ़्सील मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मुबारक रिसाले "क़वारिउ़ल क़ह्हार" (फ़तावा रज़विय्या जिल्द 29 सफ़ह़ा 119 ता 285) में देखी जा सकती है।

﴿4﴾ येह कहना कि "ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम हो।" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 180, (فتاوی قاضی خان ج ٤ ص ٤٧٠

﴿5﴾ जो कहे : "**अल्लाह** तआ़ला आस्मान में है" अगर तो उस ने वोह मुराद लिया जो ज़ाहिरन अख़्बार (या'नी अह़ादीसे मुबारका) में है उस की ह़िकायत (या'नी उसी का बयान) है तो फिर **कुफ़्र** नहीं। अगर **मकान** की निय्यत है तो **कुफ़्र** है और अगर कुछ भी निय्यत नहीं तब भी अक्सर **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक **कुफ़्र** है। (البحر الرائق ج ٥ ص ٢٠٣, फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 284) **अफ़्सोस!** इस त़रह़ के जुम्ले लोगों में ब कसरत बके जाते हैं। आप ग़ौर फ़रमा लीजिये अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ज़िन्दगी में कभी इस त़रह़ बोल दिया है **तौबा, तजदीदे ईमान**

www.dawateislami.net

व तजदीदे निकाह़ कर लीजिये।

6 येह कहना कि "कोई मकान कोई गोशा ऐसा नहीं जहां ज़ाते खुदा मौजूद न हो" **कलिमए कुफ़्र** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 620, مجمع الانھر ج۲ ص۵۰۵)

7 जो कहे : "**अल्लाह** तआ़ला आस्मान से या अ़र्श से देख रहा है" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(فتاوی عالمگیری ج۲ ص ۲۵۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

"अल्लाह ज़ालिमों का साथ देता है" कहना

सुवाल : कोई अपने दुश्मन से तंग आ कर अगर इस त़रह़ बक दे कि "फुलां शख़्स ने हमारी नाक में दम कर रखा है और दुख की बात तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी ऐसों ही के साथ होता है।" उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है कि इस जुम्ले में रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ को ज़ालिमों का साथ देने वाला क़रार दे कर उस की **तौहीन** की गई है।

www.dawateislami.net

ख़ुदा की नाराज़गी को हलका जानना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा है मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाराज़ होने की परवाह नहीं, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं।

जवाब : इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी को हलका जानना पाया जा रहा है। और उस عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ होने का पहलू भी मौजूद है लिहाज़ा मज़्कूरा जुम्ला **कुफ़्रिय्या** है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "किसी से कहा कि गुनाह न कर वरना **ख़ुदा** तुझे **जहन्नम** में डालेगा।" उस ने कहा : "मैं **जहन्नम** से नहीं डरता" या कहा : "**ख़ुदा** के अ़ज़ाब की कुछ परवा नहीं।" या एक ने दूसरे से कहा : "**तू ख़ुदा** से नहीं डरता ?" उस ने गुस्से में कहा : "नहीं।" या कहा : "**ख़ुदा** क्या कर सकता है ? इस के सिवा क्या कर सकता है कि **दोज़ख़** में डाल दे" या कहा : "**ख़ुदा** से डर।" उस ने कहा : "**ख़ुदा** कहां है ?" येह सब **कलिमाते कुफ़्र** हैं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 180)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

इमामे आ'ज़म का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग दुन्या ही को अपना सब कुछ बना बैठते, मौत को भुला बैठते और नेक लोगों से रिश्ता तुड़ा बैठते हैं वोह आम तौर पर बे लगाम होते हैं, उन की ज़बान गोया उन के दिल के आगे होती है, दिल की त़रफ़ रुजूअ़ करने की नौबत ही नहीं आती बस जो कुछ ज़बान की नोक पर आया फिसल कर बाहर आ जाता है और वोह हर दम बकबक करते रहते हैं और फिर इस त़रह़ مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़बान से **कुफ़्रिय्यात** सरज़द होने का इम्कान भी बढ़ता चला जाता है। हमें अपने अन्दर **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ पैदा करना चाहिये। करोड़ों ह़नफ़िय्यों के पेश्वा और मेरे आक़ा व मौला ह़ज़रते इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म, **इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का **ख़ौफ़े ख़ुदा** मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे मन्क़ूल है, एक बार सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे कि किसी बात पर अचानक उस शख़्स ने **इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा **:** **اِتَّقِ اللہ** ! या'नी खुदा का ख़ौफ़ करो ! इन अल्फ़ाज़ का उस के मुंह से निकलना था कि **सय्यिदुना इमामे**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاخبار)

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का चेहरा ज़र्द पड़ गया, सर झुका लिया और फ़रमाने लगे : भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे, इल्म पर जिस वक़्त किसी को नाज़ होने लगे उस वक़्त वोह इस बात का ज़रूरत मन्द होता है कि कोई उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद दिला दे । (عقود الجمان ص ٢٢٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भूल से पाक है

सुवाल : "मेरी क़िस्मत में शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुछ लिखना ही **भूल** गया है" येह कहना कैसा है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है । क्यूं कि इस क़ौल में **अल्लाहु** रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की शदीद तरीन **तौहीन** करते हुए उसे "**भूल** जाने वाला क़रार" दिया गया है । यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **भूल जाने से पाक है ।** और हर वोह बात जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ **भूल** जाना साबित किया जाए **ख़ालिस कुफ़्र** है । चुनान्चे पारह 16 **सूरए ताहा** की आयत नम्बर 52 में इर्शाद होता है :

لَا یَضِلُّ رَبِّیۡ وَلَا یَنۡسَی ﴿۵۲﴾ (پ ١٦ طٰہٰ ٥٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मेरा रब (عَزَّوَجَلَّ) न बहके न भूले ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ भूल मन्सूब करना

सुवाल : "न जाने मेरा बुलावा कब आएगा ? शायद बनाने वाला **भूल** गया है" येह कहना कैसा है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भूलने से पाक है। **बहारे शरीअ़त** में है : "कोई शख़्स बीमार नहीं होता या बहुत बूढ़ा है मरता नहीं उस के लिये कहना कि इसे **अल्लाह** मियां **भूल** गए हैं" येह **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 179, عالمگیری ج۲ص۲۵۹)

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

सुवाल : **अल्लाह** मियां कहना कैसा ?

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ "मियां" का लफ़्ज़ बोलना मम्नूअ़ है। **अल्लाह** पाक, **अल्लाह** तआ़ला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला वग़ैरा बोलना चाहिये। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "(**अल्लाह** तआ़ला के लिये) **मियां** का इत़्लाक़ न किया जाए (या'नी न बोला जाए) कि वोह तीन मा'ना रखता है, इन में दो रब्बुल इ़ज़्ज़त के लिये मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) हैं **मियां** (या'नी) **आक़ा**

www.dawateislami.net

और **शोहर** और मर्द व औ़रत में **ज़िना का दलाल**, लिहाज़ा इ़त्लाक़ मम्नूअ़।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 614)

"ईमान" का लिबास किस को मिलेगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई आफ़त आ पड़े ख़्वाह त़वील अ़र्से तक बे रोज़गारी या बीमारी दूर न हो या मसाइल ह़ल न हों, हर मौक़अ़ पर सिर्फ़ **सब्र सब्र** और **सब्र** से काम लेना और आख़िरत का सवाब व अज्र ह़ासिल करना चाहिये। ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **ऐ मेरे रब** ! जो आदमी तेरी रिज़ा के ह़ुसूल के लिये मुसीबतों पर **सब्र** करता है उस परेशान और ग़मगीन आदमी का बदला क्या है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : उस का बदला येह है कि मैं उसे **ईमान का लिबास** पहनाऊंगा और उस से कभी भी नहीं उतारूंगा। (احیاءُ العلوم ج٤ ص٩٠) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

“कैसे यक़ीन करूं कि अल्लाह सुनता है ।” कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई परेशान ह़ाल यूं कह बैठे : “कैसे यक़ीन करूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सुनता है ।” तो क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है क्यूं कि मज़्कूरा जुम्ले में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के समीअ़ होने (या'नी सुनने वाला होने की सिफ़त) पर शक किया जा रहा है जो कि **ख़ालिस कुफ़्र** है । बिलफ़र्ज़ येह जुम्ला **दुआ़** के मौक़अ़ पर बोला गया और कहने वाला अगर अपने इस क़ौल से येह मुराद लेता है कि “कैसे यक़ीन करूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुआ़ क़बूल करता है” तो येह मा'ना भी **कुफ़्रिय्या** हैं कि इस में मुत़्लक़न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **दुआ़** न क़बूल करने का इज़्हार किया जा रहा है, ह़ालां कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** की आयत नम्बर 60 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ने फ़रमाया : मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा ।

www.dawateislami.net

है तेरा फ़रमां اُدْعُوْنِیْٓ है येह दुआ हो क़ब्र न सूनी
जल्वए यार से इस को बसाना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

"अल्लाह साबिरों के साथ है" का इन्कार

सुवाल : किसी परेशान ह़ाल ने बिफर कर कहा : कहते हैं, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब्र करने वालों के साथ है।" मैं कहता हूं, येह सब बक्वास है। इस त़रह़ कहना कैसा है ?

जवाब : खुला **कुफ़्र** है कि इस क़ौल में रब्बुल आ़लमीन की सख़्त **तौहीन**, और इस आयते क़ुरआनी का इन्कार और इस की भी **तौहीन** पाई जा रही है :

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۳﴾
(پ ۲ البقرة ۱۵۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) साबिरों के साथ है।

करबला वालों से बढ़ कर मुसीबत ज़दा कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! परेशान ह़ाल को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे और अपने आप को समझाते हुए दिल ही दिल में कहे कि शहीदान व असीराने करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर जो

www.dawateislami.net

मुसीबतें आई थीं वोह यक़ीनन मुझ पर आने वाली मुसीबतों से करोड़ों गुना ज़ियादा थीं मगर उन्हों ने हंसी ख़ुशी बरदाश्त कीं और **सब्र** कर के जन्नत के ह़क़दार बने। मैं कहीं बे सब्री कर के आख़िरत की सआ़दत से महरूम न हो जाऊं। यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन दुन्यवी परेशानियों, तंग दस्तियों, बीमारियों वग़ैरा में सब्र करने वालों के लिये आख़िरत की ख़ूब ख़ूब राह़त सामानियां हैं।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मर्द व औ़रत मुसाफ़हा नहीं कर सकते

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम में से किसी के सर में लोहे की कील ठोंक दी जाती उस से बेहतर है कि वोह किसी ऐसी औ़रत को छूए जो उस के लिये ह़लाल नहीं। (مُعجَم کبیر، ۲۰/۲۱۱، حدیث: ۴۸۶)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net